संगीत के क्षेत्र में जीविकोपार्जन का संभावनाएं

Dr. Shruti Hora
Assistant Professor, P.G.G.C.G., Sector-11, Chandigarh

स्वरों की वह रचना जो प्राणी मात्र को प्रसन्नता प्रदान करें, संगीत कहलाती है। संगीत चाहे शास्त्रीय हो, लोकसंगीत हो, सुगम हो, वाद्य वृन्द या फिर पाश्चात्य संगीत के रूप में हो, वह किसी भी व्यक्ति विशेष का मनोरंजन करने को क्षमता रखता ही है। संगीत कला के द्धारा जैसी भावों की अभिव्यक्ति हो सकती है, वह अन्य किसी साधन के द्धारा संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त जड़, चेतन, पशु–पक्षी सभी इससे प्रभावित होते है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी मोड़ पर संगीत कला से अवश्य प्रभावित होता है। विश्व के कण–कण में संगीत परमात्मा के अंश की तरह व्याप्त है। संगीत की इस प्रभावित करने की शक्ति का प्रयोग अनेकों दिशाओं में किया गया है व अनेकों प्रकार से किया जा सकता है। अवसर चाहे दुख का हो या खुशी का, शास्त्रीय–संगीत, सुगम संगीत व लोकसंगीत सभी जगह पर वातावरण को अवसर के अनुकूल सहायक सिद्ध होते हैं।

प्राचीन समय से आज तक संगीत हमारे आध्यात्मिक और भावनात्मक जीवन का अनिवार्य अंग रहा है। हमारी कलात्मक अनुभूतियों को भी इस कला से बहुत प्रोत्साहन मिला है। संगीत मानवीय अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। संगीत एक ऐसी कला है जो जीवन में समायोजन तथा आत्मिक सुखानुभूति का साधन बनती है। आज के भौतिकवादी युग में मन की शान्ति और सम्पूर्ण व्यक्तिगत विकास के लिए संगीत शिक्षा को अभिन्न अंग बनाना अतिआवश्यक हो गया है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्व॰ डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में –

''जीवन में संगीत का क्या स्थान है, और क्या होना चाहिए? इस के बारे में कुछ कहना आवश्यक है, मेरा यह निश्चित मत है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से संगीत मनुष्य के लिए साधना का विषय है। भौतिक जीवन में संगीत मनोरंजन एंव रोज़गार का उतना ही बड़ा साधन है जितना कि यह आध्यात्मिक जीवन में प्रेरणा का स्त्रोत है।''

संगीत शिक्षा का कार्य केवल विषय का ज्ञान प्राप्त करना ही नही अपितु व्यक्ति को सभ्य शिष्ट और इस योग्य भी बनाना है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके या रोज़गार के अवसर भी प्राप्त कर सके। आज के भौतिकवादी और वैज्ञानिक युग में यदि हमारी संगीत शिक्षा यह कार्य नहीं कर सकती तो इसे व्यर्थ समझा जाता है। आज यही सवाल हमारी वर्तमान संगीत शिक्षा पर उठ रहा है। क्या

हमारी वर्तमान संगीत शिक्षा आज के संगीत विद्यार्थियों को रोज़गार प्रदान कर रही है? यह एक अत्यंत चिंतनीय विषय है।

यदि ध्यान से देखा जाए तो हमारे संगीत पाठ्यक्रम में इन चीज़ों का अभाव है। हमारा संगीत का पाठ्यक्रम आज के भौतिकावादी युग में दिशाहीन व अधूरा प्रतीत होता है। इसी कारण संगीत विषय हमारी शिक्षा पद्धति एंव रोज़गार के क्षेत्र में अपना उचित स्थान नहीं बना पाया है जितनी कि अन्य दूसरे विषय आज ऐसे ही विषयों को महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है जो रोज़गार में अधिक सहायक हो सके। हमारे संगीत के पाठ्यक्रम में समय के साथ परिवर्तन न आने के कारण संगीत के विद्यार्थियों को निराशा का सामना करना पड़ा रहा है। हमारे संगीत का पाठ्यक्रम केवल शास्त्रीय संगीत तक सीमित होने का कारण इसके रोजगार की सम्भावनाए थोड़ी कम हो गई है। संगीत का अभिप्राय केवल शास्त्रीय संगीत से ही नही अपितु इसके लोक संगीत, सुगम संगीत, चित्रपट संगीत गायन, वादन एवं नृत्य सभी विद्याओ का समावेश है। और रही संगीत शिक्षा की बात तो उसमें सिर्फ शास्त्रीय संगीत विषय के रूप में पढ़ाने या सिखाने से रोजगार के अवसरों का अभाव है। अतः संगीत को रोजगार परक बनाने के लिए इसके पाठ्यक्रय में कुछ एक बदलाव आवश्यक है। अब का संगीत विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त कर संगीत शिक्षा के क्षेत्र को ही अपने रोजगार का साधन मानते है। इसके इलावा संगीत से जुड़े कई अन्य क्षेत्र जिनमें रोजगार की काफी संभावनाएँ है।

1 संगीत शिक्षक:– किसी भी विद्या का मस्तिष्क एवं संवर्द्धन तभी संभव होता है जब उसका शिक्षण होता रहे। भारतीय संस्कृति में शिक्षक का स्थान भगवान से ऊँचा माना जाता है। इस विषय में कबीर जी का मत है कि–

गुरू गोबिन्द दोनो खड़े, काकै लागूँ पायें।
बलिहारी गुरू आपने, जिन गोबिन्द दियो मिलाये।।

वर्तमान समय में विद्यालयो, शिक्षण संस्थाओं विश्वविद्यालयों आदि में अनेक शिक्षक कार्यरत हैं और पूरी तरह से संगीत शिक्षण की सेवा में लीन होकर जीविको पार्जन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत शिक्षण अर्थात अन्य विषयों के संगीत के क्षेत्र में देखने को मिलता है। हमारे समाज में संगीत के शिक्षण संबधी व्यवसायिक संभावनाए अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं में अधिक पाई गई हैं।

2 मंच प्रदर्शन– संगीत के क्षेत्र में मंच प्रदर्शन का व्यवसाय अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यवसाय है। भारतीय संगीत में घराना परम्परा में प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य मंच प्रदर्शन हो रहा है। समय–समय पर संगीतकर अपनी प्रतिभा–कौशल आदि का परिचय जनसाधारण को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से देते रहते हैं। जनता के सन्मुख प्रत्यक्ष रूप से बैठकर कला प्रदर्शन करना प्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन है। प्रत्यक्ष

मंच प्रदर्शन दो प्रकार से देखने को मिलता है, प्रथम व्यक्तिगत व द्वितीय प्रयोजकों के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से मंच प्रदर्शन शास्त्रीय संगीत में तो कम पाया जाता है किन्तु सुगम संगीत क्षेत्र में व्यक्तिगत मंच प्रदर्शन कुछ सीमा तक सफल प्रतीत होता है। अनेक साामजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक समारोहों, मेलो आदि पर गज़ल–भजन व गीतों आदि के गायक, वाद्य–वादक व नर्तक अपनी कला–कौशल का प्रदर्शन सभी मंडपों व अन्य स्थानो पर करते हैं। धार्मिक स्थलों पर धार्मिक भावना से भजन कीर्तन करने वाले नियुक्त गायकों वादकों के लिए भी जीविकोपार्जन हेतु कुछ राशि अवश्य निर्दिष्ट होती है। प्रयोजक संस्थाओं के माध्यम से हमारा शास्त्रीय संगीत वर्तमान समय में देपी्यमान है। प्रायोजक का अर्थ है 'मिलाने वाला' परन्तु व्यवहार में किसी कार्यक्रम हेतु जो प्रबंधकीय व आर्थिक भार वहन करता है, प्रयोजक कहलाता है। इन प्रायोजक संस्थाओं में स्पिक मैके, संगीत नाटक अकादमी, साहित्य कला परिषद् आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन प्रायोजकों के माध्यम से अनेक संगीतकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। संस्थाओं द्वारा लोकगीत, भाव गीत, भाव संगीत आदि के कार्यक्रम भी आयोजित होते रहते हैं।

अप्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन जनता के सम्मुख बैठकर विभिन्न प्रसार के साधनों द्वारा प्रस्तुत किया जाए, वह अप्रत्यक्ष मंच प्रदर्शन माना जाता है। आकाशवाणी, ऑडियो–वीडियो कैसेट्स सी॰डी, इंटरनैट आदि इसी के अर्न्तगत आते हैं।

शास्त्रीय संगीत एवं संगीतकारों को प्रोत्साहन देने में आकाशवाणी का योगदान उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय दूरदर्शन व व्यक्तिगत दूर दर्शन के कन्द्रों पर भी संगीतकारो को मंच व पारितोषिक प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त एलबम, आडियो–वीडियो, सी॰डी कैसेट्स आदि से भी व्यक्तिगत रूप में इनके निर्माताओं द्वारा संगीतकार मंच व पारितोषिक प्राप्त करते हैं।

3 पार्श्व संगीत–पार्श्व से अभिप्राय है जो समक्ष न हो। पार्श्व संगीतकार रंग भूमि अर्थात मंच पर न होकर आवरण में रहकर हो रहे मंच कार्यक्रमों की सहायता हेतु गायन–वादन करते है। जैसे फिल्मी संगीत, दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमो आदि में पार्श्व संगीत में संगीत व्यवसाय को प्रोत्साहित किया है। उपरोक्त के अतिरिक्त विभिन्न लोक नाट्को तथा कठपुतली आदि के प्रदर्शन में भी पार्श्व संगीत एवं संगीतकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है तथा अर्थोपार्जन करते है।

4 नाटकों में संगीत– वर्तमान समय में नाटक का प्रचलन अति अल्प है परन्तु अनेक संयोजक संस्थाए नाटक विद्या का संरक्षण कर रही हैं। नाटकों में पार्श्व व प्रत्यक्ष दोनों तरह से संगीत का प्रयोग होता है। लोक नाटक विधाएँ जैसे नौटंकी, स्वांग और धार्मिक नाटक जैसे रामलीला, कृष्ण लीला आदि भी गायकों व वादकों की आय का साधन हो सकता है।

5 गीतकार– विभिन्न अवसरों के अनुरूप लिखे गए गीत ही समारोहों के सांगीतिक कार्यक्रमों को सार्थकता प्रदान करते हैं। प्राचीन काल में चरण, भाट आदि आश्रयदाता की प्रशंसा में तथा राष्ट्र–भक्ति की भावना जगाने हेतु लिखा करते थे। वर्तमान समय में गीतकार फिल्मों, दूरदर्शन–धारावाहिक, धार्मिक, राष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोह व व्यक्तिगत रूप से अनेक विचारों के प्रचार–प्रसारण हेतु गीतो की रचना द्वारा धन अर्जित करते हैं।

6 धुनकार– सभी प्रकार के गीतों हेतु व वाद्य–वादन हेतु स्थिति अनुरूप धुनें बनाकार अपनी कला का परिचय भी देते हैं व जीविकोपार्जन प्राप्त करते हैं।

7 संगीत निर्देशक– गीत धुन व संगीत निर्देशन के मुख्य क्षेत्र नाटक, गीत नाट्य, नृत्य नाट्य, वृन्दगान, दूरदर्शन, चित्रपट, आकाशवाणी आदि क्षेत्रों में गीतकार, धुनकार व संगीत निर्देशक अपनी कला कौशल का प्रदर्शन कर धनोपार्जित करते हैं।

8 रूप सज्जाकार – गायन, वादन तथा नृत्यादि के मंच, दूरदर्शन, एलबम, वीडियो कैसेट, वी॰सी॰डी आदि पर प्रदर्शन हेतु किस प्रकार की सज्जा करनी है, कलाकारों की पोशाक–वेशभूषा तथा उनका रंग–डिजाईन आदि का निर्णय रूप–सज्जाकार लेता है।

9 वाद्य निर्माता– वाद्यो के बिना सांगीतिक कार्यक्रमो का कल्पना भी नही की जा सकती। असंख्य वाद्य निर्माता सांगीतिक वाद्यों के निर्माण द्वारा अपनी जीविकोपार्जन कर रहे हैं। आधुनिक समय में इलेक्ट्रॉनिक वाद्य जैसे इलेक्ट्रानिक वाद्य जैसे इलेक्ट्रानिक तानपुरा, तबला आदि का प्रचलन हो गया है। इसके अतिरिक्त सिनथेसाइजर, इलेक्ट्रानिक ड्रम आदि विदेशी वाद्य यन्त्र भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके प्रचार से इनके निर्माताओं व वितरकों को भी अच्छी आय के साधन उपलब्ध हुए हैं।

10 कैसेट, सी॰डी॰ एलबम आदि के निर्माता – वर्तमान समय में कैसेट, सी॰डी, एलबम आदि के प्रचलन से इन गायकों–वादकों, निर्देशकों के अतिरिक्त धनोपार्जन इन के निर्माता भी करते हैं।

11 संगीत शास्त्रकार, अनुवादक, प्रकाशक व वितरक– संगीत शास्त्रकारों का संगीत कला के क्षेत्र में गणना अन्तिम कड़ियों में ही होती है। भारतीय संगीत में भरतमुनि, मतगमुनि, अहोबल, आदि अनेक ऐसे संगीत शास्त्रियों के नाम उल्लेखनीय हैं जिनके कारण आज हमारे देश का संगीत विश्व में ख्याति प्राप्त है। आज के समय में संगीत शास्त्री अपने ग्रन्थों के प्रकाशन से अच्छी धन राशि कमा रहे हैं। विभिन्न प्रादेशिक गीतों के अनुवादक, प्रकाशक केन्द्र व वितरक भी संगीत कब के सेवा में प्रस्तुत रूप से सहयोग देकर धन कमा रहे हैं व कमा सकते हैं।

12 संगीत पत्रकार, समीक्षक व सम्पादक – कोई भी संगीतकार अपनी कला कौशल के प्रदर्शन के पश्चात जन साधारण की प्रतिक्रिया अवश्य जानना चाहता है। इसके अतिरिक्त यदि कलाकारों के अलोचक भी हो तो उन्हें त्रुटियों का आभास भी हो जाता है। इन सब कार्यो को एक कलाकार ही कर सकता है। स्थान–स्थान पर हो रहे कार्यक्रमों का अवलोकन करके, उसकी अलोचनात्मक व्याख्या विभिन्न समाचारों, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक पत्रिकाओं में करते हैं। ये पत्रकार, समीक्षक, अलोचक व सम्पादक आदि अर्थोपार्जन के साथ–साथ जनसाधारण के विरूद्ध यदि कोई कार्य हो रहा हो तो उस पर तुरन्त अंकुश लगाने का कार्य भी कर सकते हैं।

13 सांगीतिक चिकित्सा– संगीत का आरोग्यदायिनी शक्ति के बारे आज प्रायः सभी लोग परिचित हैं। विभिन्न रोगो में संगीत द्वारा विभिन्न चमत्कार देखे जाते हैं। संगीत तथा योग के अष्टांग का संबंध सर्वविध्ति है। मानव ही नहीं पशु–पक्षी व पेड़–पौधों पर भी संगीत का प्रभाव होता है। आज की व्यवस्तता एवं तनाव भरी जिदंगी में संगीत द्वारा मनुष्य कुछ शांति व मनोरंजन प्राप्त कर सकता है। आज के समय में संगीत चिकित्सा भी व्यवसाय के रूप में अपनाई जा सकती है। संगीत चिकित्सा के व्यवसाय के चिन्ह 30वें दशक में बताते हुए भगवत शरण शर्मा करते थे। उनकी दुकान का नाम म्यूजिकल मेडीकत्ता इंस्टीटयूट था।

14 सेना एवं पुलिस विभाग एवं अनेक सरकारी विभागों में भर्ती द्वारा – आज वायु सेना, थल सेना, जल सेना एवं पुलिस विभाग में संगीत, गायकों, वादको की भर्ती सीधी होती है तथा इन विभागों का इत्यादि में भी संगीतज्ञों को सांस्कृतिक कोटे के अन्तर्गत रोजगार की प्राप्ति होती है।

उपसंहार

उर्पयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की मर्यादाओं का पालन करने हेतु व समाज की धारा का प्रवाहमग्न होने हेतु अर्थात समय–समय पर बदलते परिवेश में परिवर्तित होते रहने के लिए व अन्य सामाजिक जीवन की आवश्यक्ताओं की पूर्ति हेतु मनुष्य को कोई न कोई व्यवसाय आवश्यक अपनाना पड़ता है। इस उद्देश्य पूर्ति हेतु संगीत एक पूर्ण साधना है। यदि हम उपर्युक्त सभी पहलूओं पर गौर करके इन्हें प्रयोग में लाएं तो इससे हमारे संगीत का स्तर भी ऊँचा उठ सकता है एव इससे संगीत के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को भी बढावा मिल सकता है। संगीत शिक्षा आने वाले समय में अन्य विषयों की तरह रोजगार के अवसर सभी छात्र–छात्राओं को प्रदान करे जिससे उनका भविष्य उज्जवल हो। अंत में यह कहने में अतियुक्ति नही होगी कि उचित संगीत–शिक्षण द्वारा, संगीत में रोजगार समस्या हल हो जाने पर ही संगीतका बहुमुखी विकास संभव हो सकेगा।